बी0टी0सी0 (तृतीय सेमेस्टर) कक्षा–शिक्षण:विषयवस्तु
(सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए)
संस्कृत
पाठ–1

उद्देश्यः–

1. संस्कृत के वर्ण से परिचित कराना।
2. ध्वनियों के लिखित रूप की समझ विकसित करना।
3. स्वर और व्यंजन के अंतर को पहचानने में समर्थ बनाना।
4. ध्वनियों के उच्चारण स्थान से उनके निश्चित स्थान की समझ विकसित करना।
5. संस्कृत में उच्चारण स्थान के कौशलों को विकसित करना।

विषय विस्तार–

ध्वनि भाषा की सबसे छोटी इकाई है। यह इतनी छोटी इकाई है कि इसका कोई खंड नहीं हो सकता। व्यक्ति जब वाणी द्वारा क, ख या अ, आ का उच्चारण करता है तो जो कुछ हम कान से सुनते हैं, वही ध्वनि है। क का खंड हो सकता है पर क् और अ का खंड नहीं हो सकता। ध्वनि और वर्ण भाषा की एक ही इकाई के दो नाम हैं। दोनों में सिर्फ थोड़ा अंतर है। ध्वनि केवल बोलने और सुनने में आती है आँख से उसका स्वरूप देखा नहीं जा सकता, किन्तु वर्ण बोलने और सुनने के साथ लिखित रूप में देखा भी जा सकता है। लिखित वर्ण को पढ़ा जा सकता है।

वाणी द्वारा व्यक्त ध्वनियों के प्रतीक या चिह्न को वर्ण कहते हैं। इन ध्वनियों के लिए एक–एक वर्ण निर्धारित हैं। वर्ण में जब स्वर जुड़ जाता है तब वह अक्षर कहलाता है। सभी स्वर वर्ण भी है और अक्षर भी। क्, ख् वर्ण है। क्+अ = क अक्षर है। वर्ण केवल एक ध्वनि का सूचक है, जैसे–क्, ख। किन्तु अक्षर में एक या एक से अधिक ध्वनियाँ होती हैं। वर्ण अक्षर तभी बन सकता है जब उसमें एक स्वर जुड़ जाता है। जैसे क्+अ = क।

ध्वनियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

1. स्वर
2. व्यंजन

– स्वर और व्यंजनों के सम्मिलित समूह को वर्णमाला कहा जाता है। स्वर स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं इनके उच्चारण में किसी और वर्ण से सहायता नहीं लेनी पड़ती जैसे– अ आ इ ई। किन्तु व्यंजन बिना स्वरों की सहायता से उच्चरित नहीं होता।

– संस्कृत में सबसे पहले लिखित रूप में पाणिनी द्वारा माहेश्वर सूत्र प्राप्त होता है। जो इस प्रकार है–

स्वर	अ	इ	उ	ण्	
	ऋ	लृ	क्		
	ए	औ	ङ्		
	ऐ	ओ	च्		
व्यंजन	ह,	य,	व,	र,	ट्

Downloaded From www.dietmathura.org

ल ण्

झ भ अ्

घ ढ ध ष्

ज ब ग ड द श्

ख फ छ ठ य च ट त व्

क प य्

श ष स र

हल्

–यद्यपि संस्कृत भाषा में हिन्दी भाषा की वर्णमाला का ही प्रयोग होता है, परन्तु वर्णों का क्रम हिन्दी की अपेक्षा भिन्न है।

उपर्युक्त सूत्रों से प्रत्येक प्रत्याहार बन सकते हैं, लेकिन महर्षि पाणिनी ने अपने व्याकरण में निम्नलिखित 42 प्रत्याहारों का प्रयोग किया है–

1. अक् 2. अच् 3. अट् 4. अड़् 5. अण् 6. अम् 7. अल् 8. अश् 9. इक् 10. इच् 11. इण् 12. इक् 13. एड् 14. एच् 15. ऐच् 16. खय 17. खर् 18. डम् 19. चय् 20. चर् 21. छव् 22. जय् 23. झय् 24. रर् 25. झव् 26. झश् 27. झष् 28. वश् 29. भष् 30. मय् 31. यण् 32 मञ् 33. यम् 34. यय् 35 यर् 36. रल् 37. वल् 38. वश् 39 शर् 40. शल् 41. हश् 42. हल्।

इसको बनाने के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं–

1– अक् – अ, इ, उ, ऋ, लृ (अ इ उ के अ से ऋ लृ के वर्ण) इममें अंतिम हलन्त का लोप हो जाता है इसलिए इसको गिना नहीं जाता।

2– अच् – अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ वक।

– शिक्षक द्वारा इसी को हिन्दी में–विशिष्ट क्रम में रखे गये वर्णों के समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। यह वर्णमाला देवनागरी वर्णमाला भी कही जाती है। इस वर्णमाला का प्रयोग संस्कृत हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, नेपाली तथा कुछ अन्य पहाड़ी भाषाओं के लेखन में भी होता है। यह निम्न है–

– शिक्षक बच्चों के कई समूह बनाकर उनसे प्रत्याहार बनता है। जैसे–एक समूह को अक् व प्रत्याहार में कौन–कौन से वर्ण आते हैं इसका दूसरा समूह झल् प्रत्याहार तीसरा समूह जश् चौथा हल् के वर्ण बनता है। इस क्रम को बदलकर इसे दुहराया जा सकता है।

– बच्चे वर्णों से पूर्व परिचित होते हैं वे उनका उच्चारण विभिन्न जगहों पर करते भी हैं क्योंकि हमारी मातृभाषा हिन्दी में जो वर्ण है वही संस्कृत में भी, थोड़ा बहुत अन्तर है। अतः बच्चों को उन वर्णों और उनके उच्चारण स्थान के बारे में परिचित कराकर सुगमकर्ता इनको स्पष्ट कर सकता है।

गतिविधि–

1. कक्षा में बच्चों को स्वर और व्यंजन के कार्ड मिलाकर दें। बच्चों से अलग–अलग स्वर और व्यंजन छाँटने को कहें और उन अक्षरों से कोई शब्द बनाकर लिखने को कहें।
2. बच्चों के चार समूह बनाकर उनसे व्यंजन के किसी भी वर्ग के नाम पूछ सकते हैं अथवा श्यामपट्ट पर लिखने को कह सकते हैं।

मूल्यांकन–

1. क वर्ग के आने वाले वर्णों के नाम बताइय ?
2. हमारी मातृभाषा ....है। (हिन्दी / संस्कृत)

Downloaded From www.dietmathura.org

3. ध्वनि भाषा की सबसे ....इकाई है।
4. जो हम कान से सुनते हैं, बोलते हैं उनका स्वरूप देखा नहीं जा सकता वह..............................है।
5. ध्वनियों के लिखित रूप को ....कहते हैं।
6. क व ख..है। (अक्षर/वर्ण)
7. अं, अः..है। (स्वर/वयंजन/अयोगवाह)

मूल्यांकन–

1. वर्ण किसे कहते हैं ?
2. वर्ण के कितने भेद हैं ?
3. हृस्व स्वर कौन–कौन हैं ?
4. स्वर और व्यंजन में क्या अंतर हैं ?
5. माहेश्वर सूत्र लिखिए।
6. अच् में कौन–कौन से वर्ण आते हैं ?

वर्णमाला

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	लृ
व्यंजन	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्		
	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्		
	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	ड़्	ढ़्
	त्	थ्	द्	ध्	न्		
	प्	फ्	ब्	भ्	म्		
	य्	र्	ल्	व्			
	श्	ष्	स्	ह्			
	क्ष्	त्र्	ज्ञ्	श्र			

ध्वनियों के उच्चारण स्थान–जिस वर्ण का उच्चारण मुख के जिस भाग से होता है उसे उस ध्वनि या वर्ण का उच्चारण स्थान कहा जाता है। वर्णों के उच्चारण स्थान निम्नवत् हैं–

	स्वर	**व्यंजन**	**स्थान**	**नाम**
अ,	आ	क ख ग घ ङ. ह	कंठ	कंठ्य
इ	ई	च छ ज झ ञ य श	तालु	तालव्य
ऋ		ट ठ ड ढ ण र ष ड़, ढ़	मूर्धा	मूर्धन्य
–		त थ द ध न ल स	दाँत	दन्त्य
ड	ऊ	प फ ब भ म	होठ	ओष्ठ्य
ए	ऐ	–	कंठतालु	कंठतालव्य
ओ	औ	–	कंठ होष्ठ	कंठ ओष्ठ्य
–		व	दाँद–होठ	दन्त ओष्ठ्य

अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः उपूपहमानीयानामोष्ठौ जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्
इचुषशानां तालु एदैतोः कण्ठतालु नासिकानुस्वारस्य

Downloaded From www.dietmathura.org

ऋच्छुरषाणं मूर्धा ओदौतोः कण्येष्ठम् मुखनीसिका वचनोऽनुनासिक
लृतुलसानां दन्ताः वकारस्य दन्तोष्ठम्

–जिस स्वर या व्यंजन का उच्चारण कंठ से होता है उन्हें कंठ ध्वनि कहते हैं, जैसे–अ, आ, क, ख, ग, घ, ड. ह।
–जिस स्वर या व्यंजन का उच्चारण तालु से होता है उन्हें तालु से उच्चरित ध्वनि कहते हैं, जैसे–इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श।
–जिस स्वर या व्यंजन का उच्चारण मूर्धा से होता है उन्हें मूर्धा से उच्चरित ध्वनि कहते हैं। यह कठोर और कोमल तालू के मध्य का भाग है। जैसे–ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष, ड़ ढ़।
–जिस ध्वनि (स्वर या व्यंजन) का उच्चारण दंत से होता है उन्हें द्रन्त्य उच्चरित ध्वनि कहते हैं, इसमें जिह्वा ऊपरी दांत के जड़ भाग का स्पर्श करती है, जैसे–त, थ, द, ध, न, ल, स।
–जिस ध्वनि (स्वर या व्यंजन) का उच्चारण दोनों होष्ठों की सहायता से किया जाता है उन्हें ओष्ठय से उच्चनित ध्वनि कहते हैं। जैसे–उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।
–कंठ और तालु दोनों के योग से उच्चरित ध्वनि को कंठ तालु ध्वनि कहते हैं। जैसे–ए, ऐ।
–कंठ और होंठ दोनों के योग से उच्चनित ध्वनि को कंठओष्ठम ध्वनि कहते हैं। जैसे–ओ, औ।
–जिस ध्वनि का उच्चारण दाँतों और होंठों दोनों की सहायकता से किया जाता है, उसे दन्तोष्ठ्य ध्वनि कहते हैं। जैसे–व।

गतिविधि–

1. कक्षा में बच्चों के चार समूह बनाकर पहले समूह से कंठ और तालु से उच्चरित वर्णों के नाम पूछ सकते हैं। दूसरे समूह से होंठ और कंठ तालु से उच्चरित वर्णों के नाम पूछ सकते हैं।
2. कक्षा में स्वर और व्यंजन से संबंधित कार्ड बच्चों को देकर उनके उच्चारण स्थान को पछ व श्यामपट्ट पर लिखवा सकते हैं।
3. आडियो–वीडियो की सहायता से ध्वनि को सुनाकर व उच्चारण करवा सकते हैं।
4. चित्र के माध्यम से बच्चों को सही स्थान जैसे व और ब का ज्ञान करा सकते हैं।
5. प्रश्न के माध्यम से बच्चों से उच्चारण स्थान के बारे में पूछ सकते हैं, जैसे–श, ष, स।

मूल्यांकन–

1. उच्चारण स्थान से क्या समझते हैं ?
2. क वर्ग का उच्चारण किस स्थान से किया जाता है ?
3. दन्तोष्ठय में किसकी सहायता ली जाती है ?
4. मूर्धा किसे कहते हैं ?

सुमेलित कीजिए–

क ख ग घ ड.	होंठ
प फ ब भ म	कंठ
व	मूर्धा
ट ठ ड ढ ण	दन्त्यओष्ठय

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. कंठ से उच्चरित ध्वनि.....................................है।

Downloaded From **www.dietmathura.org**

2. कठोर और कोमल तालू के मध्य का भाग ....है।
3. मुख के .... भाग से च, छ, ज, झ, ञ का उच्चारण होता है।
4. व का उच्चारण स्थान ....है।

शिक्षक बच्चों से वर्णों का उच्चारण खुद कर और बच्चों से करवाकर उसे स्पष्ट कर सकता है।

प्रयत्न—वर्णों के उच्चारण में वक्ता को जो चेष्टा या प्रयास करना पड़ता है उसे प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है—1. आभ्यन्तर प्रयत्न 2. वाह्य प्रयत्न

1—आभ्यन्तर प्रयत्न—ध्वनि निकलने से पहले मुख में जो चेष्टा होती है उसे आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। यह पाँच प्रकार का होता है—

1. **स्पृष्ट**—इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का स्पर्श करती है। इसके अन्तर्गत वर्णों के पाँचों वर्ग आते हैं। इन्हें स्पर्श वर्ण भी कहते हैं। जैसे—क च ट त प वर्ग। सुगमकर्ता बच्चों से उसका उच्चारण शुद्ध रूप में करवाकर इसे स्पष्ट कर सकता है।
2. **ईषत—स्पृष्ट**—इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का थोड़ा स्पर्श करती है। जैसे—य व र ल।
3. **विवृत**—इसके उच्चारण में मुँह खोलना (विवृत करना) पड़ता है इसके अन्तर्गत सभी स्वर और लृ आते हैं।
4. **ईषत् विवृत**—इसमें जिह्वा को थोड़ा उठाना पड़ता है जैसे—श ष स ह आते हैं।
5. **संवृत**—इसके उच्चारण में वायु का मार्ग मुख के अंदर बंद रहता है। जैसे—अ ऽ ध्वनि आता है।

2—वाह्य प्रयत्न—मुख से वर्ण निकालते समय जो चेष्टा होती है उसे वाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके 11 प्रकार हैं—

1. विवार
2. संवार
3. श्वास
4. नाद
5. घोष
6. अघोष
7. अल्प प्राण
8. महाप्राण
9. उदान्त
10. अनुदात्त
11. स्वरित

1—विवार—इसमें स्वर तन्त्रियाँ पूर्णतः खुली होती है, जैसे—क च ट त प वर्ग का पहला अक्षर आता है।

2—संवार—इसमें स्वर तन्त्रियाँ पूर्णतः बन्द रहती हैं। इसमें वर्ण का तृतीय अक्षर आता है, जैसे— ग ज द व आदि।

3—श्वास—इसमें ध्वनियों का उच्चारण बिना किसी बाधा के होता है। जैसे—ध फ ठ आदि।

4—नाद—इसमें स्वर तंत्रियों में कम्पन होता है। जैसे—म ण न।

5—अघोष—स्वर तंत्रियां एक दूसरे से अलग प्रथम द्वितीय और श ष स।

6—सघोष—स्वर तंन्त्रियां एक दूसरे के तजदीक होती हैं तथा कम्पन होती है। वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम य व र ल ह।

Downloaded From www.dietmathura.org

7—अल्प प्राण—इसमें प्राणवायु की मात्रा न्यून होती है, ऐसे वर्णों को अल्पप्राण ध्वनि कहते हैं। जैसे—वर्ण का पहला, तृतीय और पंचम (क ग ड., च ज अ, प व म, य व र आदि।

8—महाप्राण—ध्वनियों के उच्चारण में श्वास अधिक मात्रा में प्रयोग होता है उन्हें महाप्राण वर्ण कहते हैं। जैसे—वर्ग का द्वितीय, चतुर्थ और श् ष् स् ह्।

9—10—11. उदात्त, अनुदात्त, स्वरित— इसमें एक मात्रा (अ इ उ ऋ लृ) द्वितीय मात्रा (आ ई ऊ ॠ ए ऐ जो औ) और तीन मात्रा (ओऽ्म/हे राम्) का समय लगता है। इसको ह्रस्व दीर्घ और प्लुट स्वर कहते हैं।

—जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।

—जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।

—जब दूर स्थित किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए जोर से खींचकर स्वरों का उच्चारण होता है तो ऐसे स्वर को प्लुट स्वर कहते हैं—(प्लुट दीर्घ स्वरों का ही रूप होता है जैसे—आउ्म। इसको चार्ट के माध्यम से समझाया जा सकता है।

ह्रस्व स्वर	दीर्घ स्वर
अ	आ
इ	ई
उ	ऊ
ऋ	—
लृ	ए
—	ऐ
—	ओ
—	औ

गतिविधि—1 शिक्षक बच्चों से अभ्यन्तर प्रयत्न का उच्चारण अलग—अलग करा सकते हैं। इसके लिए कक्षा को पहले पाँच समूह में बाँट लें। पहला समूह स्पृष्ट ध्वनियों का उच्चारण करे। दूसरा समूह ईसत स्पृष्ट ध्वनियों का उच्चारण करे। तीसरा समूह विवृत ध्वनियों का उच्चारण करे। चौथा समूह ईषत् विवृत ध्वनियों का उच्चारण करे और पाँचवा समूह संवृत्त ध्वनि का उच्चारण करे। इस प्रकार समूह बदलकर शिक्षक बच्चों से इसका उच्चारण करा सकता है।

गतिविधि—2 कक्षा में बच्चों के दस समूह बनाकर शिक्षक वाह्य प्रयत्न के सभी वर्णों का उच्चारण अलग—अलग समूहों से करा सकता है। बीच—बीच में आने वाली कठिनाइयों का निवारण शिक्षक स्वयं शुद्ध उच्चारण कर बच्चों को सरलतापूर्वक बताने में मदद कर सकता है।

गतिविधि—3 कक्षा में शिक्षक दो तरह के कार्ड बच्चों के सम्मुख रखे। पहले तरह के कार्ड में हृस्व स्वर और दूसरे तरह के कार्ड में दीर्घ स्वर के कार्ड रखे और इसको अलग—अलग बच्चों से पहचानने को कहे जिससे बच्चे रूचिपूर्ण ढंग से इसमें हिस्सा लेकर सही ढंग से पहचानने में समर्थ हो जायेंगे।

मूल्यांकन—

1. प्रयत्न किसे कहा जाता है।
2. प्रयत्न के कितने भेद हैं। किसी एक प्रयत्न के बारे में बताइए।
3. अभ्यांतर प्रयत्न के कितने भेद होते हैं और उनका नाम लिखिए।
4. वाहय प्रयत्न के कितने भेद होते हैं और उनका नाम बताइए।

Downloaded From www.dietmathura.org

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

- ....उच्चारण स्थानों का स्पर्श करती है।
- ....उच्चारण स्थानों...................करती है।
- ....में मुँह खोलना पड़ता है।
- ....में स्वर तन्त्रियां पूर्णतः खुली रहती हैं।

6. सुमेलित कीजिए–

अ	ईषत–विवृत
च	ईषत–स्पृष्ट
य	स्पृष्ट
श	विवृत्त
इ	संवृत्त

7. कोष्टक में से छाँटकर सही शब्द भरिए।

- अल्पप्राण में प्राण वायु की मात्रा..............................होती है। (न्यून/अधिक)
- महाप्राण में श्वास...............................मात्रा में प्रयोग होता है। (अधिक/कम)
- ध्वनियों का विश्लेषण..........................के आधार पर होता है। (संरचना/बिना रचना)
- घोष ध्वनि में स्वर तन्त्रियां ....होती हैं। (नजदीक/दूर)
- अघोष ध्वनि में स्वर तन्त्रियां...............................होती हैं। (नजदीक/दूर)

8. सही पर सही तथा गलत पर गलत का निशान लगाइए–

अघोष ध्वनि	क	छ	ट	थ	
घोष ध्वनि	ग	ज	द	य	
नाद ध्वनि	ध	फ	ठ		
संवार ध्वनि	क	च	ट	त	प
अल्पप्राण ध्वनि	क	ग	ड.		

9. वर्णमाला (हिन्दी) किसे कहते हैं ?
10. माहेश्वर सूत्र का लिखित रूप कहाँ से प्राप्त होता है ?
11. झल् प्रत्याहार में कौन–कौन से वर्ण होते हैं ?

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–2

सन्धि प्रकरण–प्रकार, सूत्र, नियम निर्देश सहित सनिध विच्छेद एवं सन्धि का ज्ञान

उद्देश्य–

- छात्रों में नवीन शब्द निर्माण की क्षमता उत्पन्न करना।
- छात्रों को व्याकरण की सहायता से शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा को व्यवहार में लाने के लिए समर्थ बनाना।
- छात्रों में भाषा तथा उसके अंगों–उपांगों की रचना समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
- शुद्ध एवं अशुद्ध का युक्तिसंगत विवेचन करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- छात्रों को प्रमुख सन्धि का ज्ञान तथा उनके प्रयोग से शुद्ध नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता का विकास करना।
- नवनिर्मित शब्दों की शुद्धता का ज्ञान रचते हुए उसका सही वाक्य प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना।
- सन्धि–विच्छेद से शब्दों के शुद्ध उच्चारण कर सकने की क्षमता का विकास करना।

विषय विस्तार–

सन्धि का व्याकरण में बहुत महत्त्व है। सन्धि के द्वारा नये शब्द की रचना और पुराने शब्दों की शुद्धता की परख की जाती है। सन्धि विच्छेद और पद–विच्छेद के माध्यम से उच्चारण में शुद्धता के साथ–साथ सरलता भी लायी जा सकती है।

– वाक्य रचना के लिए शब्दों की जानकारी आवश्यक है। एक अच्छे विद्यार्थी को अच्छे शब्द कोश या शब्द भंडार की आवश्यकता होती है। शिक्षक शिक्षार्थी को सन्धि के माध्यम से शब्दकोश की वृद्धि में सहायता कर सकता है। व्याकरण भाषा को व्यवस्थित करता है। वाक्य का कौन सा अंश किस स्थान पर रहना चाहिए तथा शब्दों का रूप स्थिर करना ही व्याकरण का उद्देश्य है। सन्धि से बच्चों में नये शब्द निर्माण की योग्यता व शुद्धता विकसित होती है। सन्धि पढ़ाने से पूर्व शिक्षक सबसे पहले माहेश्वर सूत्र का ज्ञान फिर से बच्चों को कराये जिससे सन्धि समझने में आसानी होगी। माहेश्वर सूत्र पूर्व पाठ में पढ़ चुके हैं फिर भी शिक्षक द्वारा चर्चा किया जाना अनिवार्य है, जिससे बच्चा प्रत्याहार बनाने में कुशल हो सके।

शिक्षक द्वारा–सन्धि का सामान्य अर्थ है जोड़ या मेल। जब दो शब्द आपस में मिलते हैं तब सन्धि होती है। अर्थात् दो शब्दों के पास–पास आने से पहले शब्द के अंतिम वर्ण और बाद में आने वाले शब्द के प्रथम वर्ण की अतिशय सन्निकटता के कारण जो परिवर्तन (विकार) उत्पन्न होता है उसे सन्धि का नाम दिया जाता है।

– यह सन्निकटता स्वर से स्वर की व्यंजन से व्यंजन की या स्वर या व्यंजन की विसर्ग से हो सकती है। किसी भी पाठ को पढ़ते समय बच्चा आसानी से उसमें सन्धि विच्छेद करके उसमें सन्धि की समझ विकसित कर सकता है। जैसे–(सूर्य आत्मा जगतः पाठ–6) सूर्योदयेन सह दिवसारम्भः भवति। इसमें सूर्योदय में बच्चा समझ विकसित कर तुरन्त इसका सन्धि विच्छेद कर लेगा और फिर उसको सन्धि का नाम बता देगा यानि गुण सन्धि। (सूर्य+उदय) अ + उ = ओ आदि इस तरह से विभक्ति (सह) व धातु रूप (भवति) की समझ बन जायेगी।

सन्धि के प्रकार–ये तीन प्रकार की होती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

1. स्वर सन्धि या अच् सन्धि।
2. व्यंजन सन्धि या हल् सन्धि।
3. विसर्ग सन्धि।

1–स्वर सन्धि–शिक्षक वार्तालाप के माध्यम से पहले बच्चों से स्वर सन्धि पर विस्तार से चर्चा करे। जब स्वर का स्वर से जोड़ होता है तब स्वर सन्धि होती है। जैसे–विद्या+अर्थी = विद्यार्थी।

2–व्यंजन सन्धि–जब व्यंजन का स्वर या व्यंजन से मेल होता है तब उसे व्यंजन सन्धि जाना जाता है। जैसे–वाक् +ईशः = वागीशः

3–विसर्ग सन्धि–जब विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आये तो वहाँ विसर्ग सन्धि होता है। जैसे–अतः + एव = अतएव। सन्धि समझने के पूर्व माहेश्वर सूत्र से प्रत्याहार की पूर्व में माहेश्वर सूत्र एवं प्रत्याहार समझ बनाने की समझ विकसित हो चुकी है इसलिए यहाँ सिर्फ सूत्र की व्याख्या की जा रही है।

स्वर सन्धि के भेद–इनके पाँच भेद हैं–दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण अयादि।

1–अकः सवर्णे दीर्घः (दीर्घ सन्धि) इसको दो विधियों से बताया जा सकता है–

1. आगमन (उदाहरण देने के बाद सूत्र तक आना)
2. निगमन (सूत्र बताने के बाद उदाहरण देना)

– अकः सवर्णे दीर्घः–इसमें अक् प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के समान (सवर्ण) इसके पूर्व में पढ़े गये प्रत्याहार से रहने पर उस अक् का दीर्घ हो जाता है। अक प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, लृ) जब दो समान स्वर पास–पास आते हैं तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। अर्थात् जब (अ या आ के बाद अ या आ आये तो आ) अ, आ, इ, ई उ, ऊ ऋ तथा लृ के बाद कोई समान स्वर आता है तो दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है।

उदाहरण–अ या आ के बाद अ या आ = आ।

राम + अवतार = रामावतार (अ + अ = आ)
देव + आलय = देवालय (अ + अ = आ)
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी (अ + अ = आ)
विद्या + आलय = विद्यालय (अ + अ = आ)

– इ या ई के बाद इ या ई = ई।

कवि + इन्द्रः = कविन्द्रः (इ + इ = ई)
गिरि + ईशः = गिरीशः (इ + ई = ई)
मही + ईशः = महीशः (ई + ई = ई)
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः (ई + इ = ई)

– उ या ऊ के बाद उ या ऊ = ऊ।

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः (अ + उ = ऊ)
लघु + उर्मि = लघूर्मि (उ + उ = ऊ)
भानु + उदयः = भानूदयः (उ + उ = ऊ)
स्वयंभू + उदयः = स्वयंभूदयः (ऊ + उ = ऊ)

– ऋ या ॠ के बाद ऋ या ॠ = ॠ।

पितृ + ऋणम् = पितृणम् (ऋ + ऋ = ॠ)

– ऋ के बाद लृ = ॠ

Downloaded From www.dietmathura.org

होलृ + लृकारः = होलृकारः (ऋ + लृ = ॠ)

गतिविधि–01 शिक्षक बच्चों को दो समूहों में बाँट दें। श्यामपट्ट पर एक समूह को शब्द एवं दूसरे समूह को अ+अ या इ+ई, उ+ऊ, ऋ+ॠ में से किसका उदाहरण है नियम निर्देशपूर्वक लिखने को कहें। शब्द बताने वाले समूह के किसी बच्चे को बोनस के रूप में उसका सूत्र पूछें। इस विधि को बदलकर हुहरायें। इस तरह सभी बच्चों में सूत्र की समझ विकसित हो सकेगी।

गतिविधि–02 कक्षा को दो समूहों में बाँट दिया जाये। पहले समूह से कोई बच्चा सन्धि से संबंधित शब्द बोलने को कहे। दूसरे समूह से कोई बच्चा उठकर उसका सन्धि नियम के साथ बताये। इस प्रकार समूह बदलकर शिक्षक बच्चों में सन्धि का ज्ञान करा सकता है।

मूल्यांकन–

1. दीर्घ सन्धि का सूत्र लिखिए।
2. निम्न को सुमेलित कीजिए–

विद्या + आलय	अ + आ
देव + आलय	आ + आ
विद्या + अभ्यासः	आ + अ
कवि + इन्द्रः	ई + इ
मही + इन्द्रः	इ + इ
भानु + उदयः	ऋ + त्र
मातृ + ऋणम्	उ + उ

3. दीर्घ सन्धि किसे कहते हैं ?

2–गुण सन्धि–सूत्र–आद् गुणः (नियम व निर्देश) शिक्षक द्वारा–

जब अ अथवा आ के बाद इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ तथा लृ आये तो उनके स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर् और अल् हो जाता है। अर्थात् इ के स्थान पर ए, उ के स्थान पर ओ, ऋ के स्थान पर अर् और लृ के स्थान पर अल् हो जाता है।

उदाहरण–अ या आ के बाद इ या ई = ए।

सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः	अ + इ = ए
रमा + ईशः = रमेशः	आ + ई = ए
नर + ईशः = नरेशः	अ + ई = ए
गंगा + ईशः = गंगेशः	आ + ई = ए

अ या आ के बाद उ या ऊ = ओ।

चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः	अ + उ = ओ
गंगा + उदकम् = गंगोदकम्	आ + उ = ओ
सूर्य + उदयः = सूर्योदयः	अ + उ = ओ

अ या आ के बाद ऋ या ॠ = अर्

सप्त + ऋषि = सप्तर्षि	अ + ऋ = अर्
महा + ऋषि = महर्षि	आ + ऋ = अर्
देव + ऋषि = देवर्षि	अ + ऋ = अर्

अ या आ के बाद लृ = अल्

Downloaded From www.dietmathura.org

तव = लृकारः = तवल्कारः अ + लृ = अल्

गतिविधि–01 शिक्षक बच्चों को दो समूह बनाकर एक समूह से शब्द बोलने को कहे और दूसरे समूह को उसका सन्धि विच्छेद बोलने को कहे। इस तरह समूह बदलकर शिक्षक बच्चों में गुण सन्धि का अभ्यास करा सकता है।

गतिविधि–02 सुगमकर्ता बच्चों की तीन टोली बनाकर पहली टोली से सन्धि विच्छेद कर श्यामपट्ट पर लिखने को कहें। दूसरी टोली उसका (सन्धि विच्छेद) शब्द लिखे और तीसरी टोली उसका नियम निर्देशपूर्वक लिखे। इस प्रकार गुण सन्धि का अभ्यास कराया जा सकता है।

गतिविधि–03 शिक्षक कार्ड विधि से भी अभ्यास करा सकता है। कक्षा में बच्चों के तीन समूह बाँटकर पहला समूह शब्द के कार्ड ले। दूसरा समूह सन्धि विच्छेद के कार्ड ले और तीसरा समूह उसका नियम के कार्ड ले। शिक्षक पहले समूह से किसी बच्चे को बुलाकर शब्द के नाम पूछे, दूसरा समूह उसका सन्धि विच्छेद करे तथा तीसरा समूह उसका नियम बताये कि यह कैसे बना। इस तरह समूह बदलकर उसका अभ्यास करा सकते हैं।

मूल्यांकन–

1. गुण सन्धि का नियम बताइए।
2. गुण सन्धि का सूत्र लिखिए।
3. देव + इन्द्र, राम + ऋषि मिलकर क्या बनेगा ?
4. रिक्त स्थान की पूर्ति छाँटकर लिखिए–

   इ के स्थान पर – (ओ, ए)

   उ के स्थान पर – (ए, ओ)

   ऋ के स्थान पर – (अर्, अल्)

   लृ के स्थान पर – (अल्, अर्)

3–वृद्धि सन्धि–(शिक्षक द्वारा) सूत्र–एच (ए ओ ऐ औ) की वृद्धि होकर ए औ हो आती है, अर्थात् जब अ अथवा आ के बाद ए या ऐ, ओ या औ हो तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ऐ और औ हो जाता है।

उदाहरण–अ या आ के बाद ए या ऐ = ऐ।

तदा + एव = तदैव आ + ए = ऐ

मम + एकः = ममैकः अ + ए = ऐ

तथा + एव = तथैव आ + ए = ऐ

अ या आ के बाद ओ या औ = औ।

वन + औषधम् = वनौषधम् अ + औ = औ

महा + औषधि = महौषधि आ + औ = औ

उष्ण + ओदनम् = उष्णौदनम् अ + औ = औ

गतिविधि–01 शिक्षक बच्चों के दो समूह बनाकर एक समूह से वृद्धि सन्धि से संबंधितशब्द बोलने को कहे और दूसरे समूह से उसका सन्धि विच्छेद करने को कहे। इस तरह समूह बदलकर सुगमकर्ता शिक्षार्थी में सरलतापूर्वक अभ्यास करा सकता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

गतिविधि–02 शिक्षक कक्ष में बच्चों का तीन समूह बनाकर पहले समूह से सन्धि विच्छेद लिखने को कहे दूसरे समूह को उसका (सन्धि विच्छेद) शब्द लिखने को कहे और तीसरे समूह से उसका नियम बताने को कहे कि किस नियम के तहत यह सन्धि हुई है।

गतिविधि–03 प्रश्नोत्तर विधि से शिक्षक बच्चों से वृद्धि सन्धि से संबंधित कुछ उदाहरण देकर पूछे। बच्चे उसका नियमपूर्वक सन्धि विच्छेद करकर बतायें।

मूल्यांकन–

1. वृद्धिरेची किसका सूत्र है ?
2. वृद्धि सन्धि के चार उदाहरण लिखिए।
3. सदा + एव मिलकर क्या बनेगा ?
4. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

   आ + ए = ––––––––––।

   अ + ए =––––––––––।

   अ + ओ =––––––––––।

   आ + औ =––––––––––।

4–यण् सन्धि–(शिक्षक द्वारा) सूत्र–इकोयणचि, इक् (इ, उ, ऋ लृ) का यण् (य, र, व, ल) हो जाता है।

शिक्षक सर्वप्रथम यण् सन्धि पर रूचिकर ढंग से बच्चों से वार्तालाप करे जिससे बच्चे सहज ढंग से व्याकरण से जुड़ सके और रूचिपूर्ण ढंग से उसमें अपनी भागीदारी दे सकें। फिर इसके बाद यण् सन्धि से सम्बन्धित नियम निर्देश व सूत्र बतायें। बीच–बीच में पूर्व संधि का अभ्यास करायें।

नियम–निर्देश–जब दीर्घ या हृस्व इ उ ऋ और लृ के बाद कोई असमान स्वर आता है तो उन दोनों के स्थान पर यण् (य, र, ल, व) हो जाता है।

उदाहरण–इ या ई के बाद असमान स्वर = य।

यदि + अपि = यद्यपि	इ + अ = य्
प्रति + एक = प्रत्येक	इ + ए = य्
इति + आदि = इत्यादि	इ + आ = य्
अति + उत्तम = अत्युत्तम	इ + उ = य्

शिक्षक इस तरह से और उदाहरण बच्चों से पूछ सकते हैं और कहीं भी कठिनाई होने पर उसका निवारण करते चलें।

उ या ऊ के बाद असमान स्वर = व।

सु + आगतम् = स्वागतम्	उ + आ = व्
मधु + अरि = मध्वरि	उ + अ = व्
अनु + अय = अन्वय	उ + अ = व्
वधु + आगमनम् = वध्वागमनम्	अ + आ = व्

ऋ के बाद कोई असमान स्वर = र्

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	ऋ + आ = र्
पितृ + आकृति = पित्राकृति	ऋ + आ = र्

लृ के बाद कोई असमान स्वर = ल

लृ + आकृति = लाकृति	ऋ + आ = ल्

Downloaded From www.dietmathura.org

गतिविधि–01 श्यामपट्ट पर कुछ उदाहरण देकर शिक्षक बच्चों से पूछ सकता है कि इसमें किस नियम के फलस्वरूप में परिवर्तन आया और इसी तरह कुछ उदाहरण बच्चों से पूछ सकते हैं।

गतिविधि–02 शिक्षक बच्चों का दो समूह बनाकर पहले समूह से नियम निर्देश पूछे और दूसरे समूह से उसके उदाहरण पूछे। इस क्रम को बदलकर उनको बोलने को कहे। इस प्रकार से बच्चों में सृजन क्षमता व सन्धि का ज्ञान सरल व सुबोध बन पड़ेगा।

गतिविधि–03 तीन चार तरह का कार्ड बनाकर भी बच्चों में गतिविधि के माध्यम से समझ विकसित की जा सकती है। जैसे–एक कार्ड यदि दूसरा कार्ड अपि तथा तीसरा कार्ड यद्यपि का तो तीनों को अलग–अलग बच्चे ढूढ़कर जोड़ सकते हैं।

मूल्यांकन–

1. यण् सन्धि का सूत्र लिखिए।
2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–
   इ या ई के बाद ————————(समान स्वर या असमान स्वर)
   उ या ऊ के बाद ————————(समान स्वर या असमान स्वर)
3. सुमेलित कीजिए–

यदि + अपि	अव्युक्तम्
प्रति + एक	स्वागतम्
इति + आदि	मध्यवरि
अति + उत्तम	यद्यपि
मधु + अरि	इत्यादि
एक + आगतम्	प्रत्येक

5–अयादि सन्धि–(शिक्षक द्वारा) सूत्र–एचोऽयवायावः, एच् का (ए, ऐ, ओ, औ) अय् अव् आय् आव् हो जाता है। एच् के (ए, ऐ, ओ, औ) बाद कोई भी स्वर आता है तो ए का अय् ओ का अव् ऐ का आय् और औ का आव् हो जाता है।

उदाहरण–ए या आ = अय्।

ने + अनम् = नयनम्	ए + अ = अय्	जे + अति = जयति
नै + अकः = नायकः	ऐ + अ = आय्	चे + अनम् = चयनम्
पो + अनम् = पवनम्	ओ + अ = अव्	भो + अनः = भवनः
पौ + अकः = पावकः	औ + अ = आव्	शौ + अकः = शावकः

शिक्षक इस तरह से और उदाहरण बच्चों से पूछ कर स्पष्ट कर सकते हैं। कुछ शब्दों पर सन्धि विच्छेद के माध्यम से अयादि सन्धि पर विस्तृत चर्चा की जा सकती है।

गतिविधि–01 शिक्षक बच्चों का तीन समूह बनायें। एक समूह कोई शब्द बोले दूसरा उसका सन्धि विच्छेद करे तीसरा समूह उसको नियम निदेशपूर्वक स्पष्ट करे। इस प्रकार क्रम बदलकर उसको दुहराया जा सकता है।

गतिविधि–02 शिक्षक बच्चों को कोई शब्द देकर पूछे कि इसमें कौन सा नियम प्रयोग किया गया है। जैसे–भो + अति = भवति, भो + अनम् = भवनम्, जे + अ = जयः आदि।

www.dietmathura.org

Downloaded From **www.dietmathura.org**

गतिविधि–03 शिक्षक बच्चों के तीन समूह बनाकर एक समूह से श्यामपट्ट पर शब्द लिखने को कहे और दूसरा समूह आकर उसका सन्धि विच्छेद करे तीसरा समूह उसका नियम बताकर सूत्र को स्पष्ट करे।

मूल्यांकन–

1. अयादि सन्धि किसे कहते हैं ?
2. चयनम् का सन्धि विच्छेद कीजिए।
3. अयादि सन्धि का सूत्र लिखिए।
4. भो + अनम् मिलकर क्या बनेगा ?
5. सुमेलित कीजिए–

पो + अनम	ए + अ
चे + अनम्	ओ + अ
संचे + अः	औ + अ
शौ + अकः	ए + अ

6. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

नै + अनम्=.. ।
पौ + अकः=.. ।
नै + अकः=.. ।

6–व्यंजन सन्धि–(शिक्षक द्वारा) व्यंजन वर्ण व वर्ग के बारे में बच्चे पूर्व कक्षा में पढ़ चुके हैं। अब शिक्षक व्यंजन सन्धि के बारे में विस्तार से चर्चा करें और बच्चों को बताये कि कौन–कौन व्यंजन मिलकर क्या बना और यह किस नियम के अनुसार बना। व्यंजन सन्धि किसे–किसी व्यंजन वर्ण के बाद कोई स्वर या व्यंजन वर्ण हो तो वहाँ व्यंजन सन्धि होती है, जैसे–वाक्+ईशः=नागीशः
व्यंजन सन्धि के प्रकार–व्यंजन सन्धि तीन प्रकार की होती है। जो निम्न है–1. श्चुत्व सन्धि 2. ष्टुत्व सन्धि 3. जश्त्व सन्धि।

1–श्चुत्व सन्धि–स्तोःश्चुनाश्चुः (सकार या तवर्ग (त थ द ध न)का क्रमशः सकार या चवर्ग (च छ ज झ ञ) हो जाता है। बच्चों शिक्षक से शुद्ध उच्चारण के साथ सूत्र का अभ्यास कराये और इस पर विस्तृत चर्चा करे। सभी सन्धि को प्रत्याहारों के माध्यम से स्पष्ट करते हुए इसके नियम को समझाये।

नियम निर्देश–यदि स अथवा व वर्ग (त थ द ध न) के किसी वर्ण के पश्चात् श या च वर्ग (च छ ज झ ञ) का कोई वर्ण आये तो स के स्थान पर श और व वर्ग के स्थान पर च वर्ग का व्यंजन वर्ण हो जाता है। जैसे–

कस् + चित् = कश्चित अर्थात स् के स्थान पर श हो गया
सद् + जनः = सज्जनः अर्थात द् के स्थान पर ज हो गया

2–ष्टुत्व सन्धि– ष्टुनाष्टुः (सकार या तवर्ग (त थ द ध न)का क्रमशः सकार या ट वर्ग (ट ठ ड ढ ण) हो जाता है।

नियम निर्देश–जब स् अथवा त वर्ग के बाद ष तथा ट वर्ग आये तो स् का ष् तथा त वर्ग (त थ द ध न) का ट वर्ग (ट ठ ड ढ ण) हो जाता है। जैसे–

रामस् + टीकते = रामष्टीकते अर्थात स के स्थान पर ष हो गया
मत् + टीका = मट्टीका अर्थात त के स्थान पर ट हो गया

Downloaded From www.dietmathura.org

कृष् + नः = कृष्णः अर्थात न के स्थान पर ण हो गया

तत् + टीका = तट्टीका अर्थात त के स्थान पर ट हो गया

2–जश्त्व सन्धि–यह दो प्रकार का होता है–1. पदान्त तश्त्व 2. अपदान्त जश्त्व

1. **पदान्त जश्त्व**–झलाजशोऽन्ते (झल् वर्ग का 1 2 3 4 श ष स ह) का जश (जब ग ड द श) उसी वर्ग का ।।। वर्ण हो जाता है।

नियम निर्देश–झल्–प्रत्याहार के बाद (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ग के बाद स्वर या व्यंजन हो तो उसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण के बाद स्वर या व्यंजन हो तो उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है।

उदाहरण–

वाक् + दानम् = वाग्दानम

वाक् + ईशः = वागीशः

जगत् + ईशः = जगदीशः

2. **अपदान्त जश्त्व**–झलां जश् झशि (झल् वर्ग का 1 2 3 4 श ष स ह) का जश (झ भ ग घ ध फ ब ग ड़ द) झल के बाद (1 2 3 4 श ष स ह) झश् (झ भ घ ढ ड ज ब ग ड द) के वर्ण हो तो झल् प्रत्याहार जश् प्रत्याहार हो जाता है। (ज ब ग ड द श)

उदाहरण–

लभ् + धम् = लब्धम्

सिध् + ध = सिद्धः

चर्त्व सन्धि–खरि च झल् (1 2 3 4 श ष स ह) के बाद स्वर (1 2 3 श ष स) तो झल् उसी वर्ग का 1 वर्ण हो जाता है।

उदाहरण–लभ् +स्यते = लप्स्यते।

अनुस्वार सन्धि–मोऽनुस्वारः

यदि पद के अन्त में म् आये और उसके बाद कोई व्यंजन आये तो म का अनुस्वार (–ं) हो जाता है। जैसे–हरिम् + वन्दे = हरिंवन्दे, म + व = –ं

अध्य् + गच्छामि = अध्ं गच्छामि म + ग = –ं

विसर्ग सन्धि–शिक्षक सबसे पहले विसर्ग के बारे में बच्चों से बातचीत करें। वे इसके चिह्न को बताये और बच्चों से चित्र लगवाकर उसे उच्चारण करने को कहे। शिक्षक विसर्ग लगने के बाद किस तरह से शब्दों में परिवर्तन होता है और नये शब्द की निष्पत्ति कैसे होती है इस पर चर्चा करने के बाद इसके नियम निर्देश के बारे में बताये।

नियम निर्देश–जब विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के मिलने से जो ध्वनिगत परिवर्तन होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। सभी सन्धियों में आगमन और निगमन विधि का प्रयोग कर छात्र को सन्धि के बारे में स्थायी ज्ञान कराया जा सकता है। दोनों विधि का प्रयोग छात्रों के माध्यम से शिक्षक करा सकता है। इसके विसर्ग सन्धि के नियम यहाँ नीचे दिये जा रहे हैं–

1. यदि विसर्ग के बाद किसी वर्ग का 3 4 5 अथवा य व र ल ह हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। उदाहरण–

यशः + दा = यशोदा	विसर्ग का ओ हो गया है।
मनः + रंजन = मनोरंजन	विसर्ग का ओ हो गया है।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

तपः + वन = तपोवन   विसर्ग का ओ हो गया है।

सरः + जः = सरोजः   विसर्ग का ओ हो गया है।

इसमें कहीं–कहीं अपवाद भी होता है। कहीं–कहीं सन्धि होने पर विसर्ग का र् हो जाता है। जैसे–

पुनः + मिलन = पुनर्मिलन

अन्तः + जगत = अन्तर्जगत

अन्तः + सम्बन्ध = अन्तर्सम्बन्ध

2. यदि विसर्ग के बाद कोई (अ, आ को छोड़कर) स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे–
   टतः + एव = अतएव
   पुनः और अन्तः शब्द इसके अपवाद है– जैसे
   पुनः + अपि = पुनरपि
   पुनः + चर्चा = पुनरचर्चा/पुनर्चर्चा
3. यदि विसर्ग के बाद स्वर के स्थान पर क, ख, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों बना रहता है। जैसे–
   अधः + पतन = अधः पतन
   अन्तः + कथा = अन्तः कथा
4. यदि विसर्ग के बाद अ हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। जैसे–मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा
5. यदि विसर्ग के पहले (अ, आ को छोड़कर) अन्य स्वर हो तो और विसर्ग के पश्चात् वर्ग का 3 4 5 अथवा य व र ल ह हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जाता है।
   जैसे–निः + धन = निर्धन
   दुः + लभ = दुर्लभ
   दुः + गति = दुर्गति
6. यदि विसर्ग के पूर्व इ हो और उसके बाद र आये तो इ का ई हो जाता है।
   जैसे–निः + रोग = निरोग
   निः + रस = निरस
   निः + रव = नीरव
7. यदि विसर्ग के पूर्व इ या उ हो और विसर्ग के बाद क, ख प, फ में से कोई व्यंजन वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर 'ष्' हो जाता है।
   जैसे–निः + फल = निष्फल
   दुः + कृत्य = दुष्कृत्य
   निः + पाद = निष्पाद
   निः + कलुष = निष्कलुष
8. यदि विसर्ग के बाद श ष स में से कोई वर्ण आये तो विसर्ग के बाद में पड़ने वाले श, ष, स का स्थान विसर्ग ले लेता है।
   जैसे–दुः + शासन = दुश्शासन
   निः + सन्देह = निस्सन्देह

Downloaded From   www.dietmathura.org

निः + संकोच = निस्संकोच

9. विसर्ग के बाद च अथवा छ होने पर विसर्ग के स्थान पर श हो जाता है।

   जैसे–निः + चय = निश्चय

   निः + छल = निश्छल

10. विसर्ग के बाद त अथवा थ हो तो विसर्ग के स्थान पर स हो जाता है।

    जैसे–दुः + तर = दुस्तर

गतिविधि–01 शिक्षक चार्ट पर शब्द लिखकर उसका कुछ बच्चों से सन्धि विच्देद कराये तथा कुछ बच्चों से उसका नियम बताने को कहे।

जैसे–यशोदा

पुनर्मिलन

अन्तर्सम्बंध

अधः पतन

दुर्लभ

निष्पाद

दुस्तर

गतिविधि–02 कक्षा में शिक्षक बच्चों के तीन समूह बनाकर एक समूह से सन्धि विच्देद बोलने को कहे तथा दूसरे समूह से उससे बने शब्द बोलने को कहे तथा तीसरे समूह से किस नियम के तहत यह सन्धि हुई है यह बताने को कहे। इस तरह समूह के क्रम को बदलकर उसे दुहराया जा सकता है।

गतिविधि–03 शिक्षक बच्च्चों के दस समूह बनाये और यह निर्देश दे कि सभी समूह से तीन–तीन बच्चे एक–एक नियम के शब्द, सन्धि विच्छेद और उसका नियम बतायेंगे। जैसे–पहला समूह दूसरे नम्बर के नियम से एक बच्चा उठकर एक शब्द श्यामपट्ट पर लिखे। उसी समूह का दूसरा बच्चा उसका सन्धि विच्छेद करे तथा उसी समूह का तीसरा बच्चा उसका नियम बताये। इस प्रकार से प्रत्येक समूह बारी–बारी से लिखे। फिर इस क्रम को शिक्षक बदलकर इसे दुहराकर स्पष्ट कर सकता है।

गतिविधि–04 इस गतिविधि में शिक्षक सभी नियमों के अलग–अलग तीन तरह के कार्ड तैयार करे और उसे मिलाकर बच्चों में बाँट दे। जो भी बच्चा पहला कार्ड उठाये उसे सभी बच्चों को दिखाये फिर उस कार्ड से संबंधित दूसरा काम जिस बच्चे के पास हो वह उसे दिखाते हुए जोड़े। इसके बाद उससे संबंधित पहला कार्ड जिस बच्चे के पास हो वह उठकर सबको दिखाये और बोले। इस तरह तीनों कार्ड जुड़कर एक शब्द का निर्माण करेंगे। इस गतिविधि से लगभग सभी बच्चे जुड़ जायेंगे और शिक्षक अपने उद्देश्य को फलीभूत कर सकेगा।

मूल्यांकन–

1. विसर्ग सन्धि किसे कहते हैं ?
2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

   मनः + रंजन = ...।

   पुनः + मिलन =..।

   पुनः + रपि =..।

   उधः + पतन =..।

   निः + फल =..।

Downloaded From www.dietmathura.org

3. यदि विसर्ग के बाद श ष स हो और बाद में पड़ने वाले श ष स का स्थान..................ले लेता
4. निम्न को सुमेलित कीजिए–

तपोवन	निः + पाद
मनोरंजन	अधः + पतन
निस्संकोच	अतः + एव
दुस्तर	तपः + वन
दुर्लभ	मनः + रंजन
अधः पतन	निः + संकोच
अतएव	दुः + लभ्
निष्पाद	दुः + तर

5. विसर्ग सन्धि का चिह्न बताइए और उसे किसी शब्द से जोड़कर लिखिए।
6. सही और गलत बताइए–

    दुस्शासन

    निश्फल

    अन्तः कथा

    मनोरंजन

    सरजः

    निर्धन

    र्दुगति
7. अनुस्वार सन्धि का सूत्र देते हुए उदाहरण देकर समझाइए।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–3

समास प्रकरण–अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुब्रीहि व द्वन्द्व

समास के उद्देश्य–

- नवीन शब्द निर्माण की क्षमता उत्पन्न करना।
- नव निर्मित शब्दों की शुद्धता–अशुद्धता का ज्ञान रखते हुए उसका सही वाक्य प्रयोग करना।
- पद्–विग्रह के माध्यम से पदों के शुद्ध उच्चारण कर सकने की क्षमता का विकास करना।
- छात्रों को प्रमुख समासों का ज्ञान तथा उनके प्रयोग से शुद्ध नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता का विकास करना।

विषय विस्तार–

समास–(शिक्षक/बच्चे द्वारा) समास शब्द सम् उपसर्गपूर्वक अस् धातु से 'धात्र' प्रत्यय करके उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है–संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक शब्दों या पदों को मिलाने से एक शब्द या पद बनता है तो उसे समास कहते हैं। योग होने पर पदों के पारस्परिक सम्बन्ध को बताने वाली विभक्तियों का लोप हो जाता है। संयोग होने पर जो नया पद बनता है उसे 'सामासिक पद' कहते हैं। पदों के मिलने पर भी उस समस्त पद का अर्थ वही रहता है जो उन पदों के अलग रहने पर या उदाहरण स्वरूप–राजपुरुषः राजः पुरुषः में विभक्ति का लोप होने से राजः पुरुषः की अपेक्षा राजपुरुषः छोटा हो गया किन्तु अर्थों में कोई भिन्नता नहीं आई। अतः यह समास युक्त पद कहा जाएगा।

–शिक्षक सबसे पहले विस्तार से समास विषय पर चर्चा करें और बच्चों को बताये कि कैसे शब्द छोटे हो जाते हैं और उनके अर्थ में भी परिवर्तन नहीं होता। समस्त पद राजपुरुष विग्रह होकर राजः पुरुषः कैसे बना। बच्चों के आकस्मिक पक्ष को मजबूत करके ही हम संस्कृत में आगे बढ़ सकते हैं और उसके आधार को स्पष्ट करके ही शिक्षक विषय की गहनता में जा सकता है।

समस्त पद–समास के नियम से मिले हुए शब्द समूह को समस्त पद कहते हैं। जैसे राजपुरुष समस्त पद है।

विग्रह–समास के अर्थ बोधक वाक्य को विग्रह कहते हैं जैसे–राजः पुरुषः।

विशेष–जब दो या अधिक तत्सम शब्द समास करके जोड़े जाते हैं तब उनमें सन्धि के नियमों का पालन अनिवार्य होता है। परन्तु हिन्दी (तद्भव) के शब्दों में सन्धि के उक्त नियम लागू नहीं होते हैं।

जैसे– वयस + वृद्ध = वयोवृद्ध
घर + आँगन = घर आँगन
श्राम + आसरे = राम आसरे

समास के प्रकार–मुख्यरूप से समासों का कुल छः रूपों में वर्गीकरण किया गया है जो इस प्रकार है–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. बहुब्रीहि समास
6. द्वन्द्व समास

Downloaded From www.dietmathura.org

अव्ययीभाव समास–'प्रायेण पूर्वपदार्थ प्रधानोऽव्ययीभावो'। प्रायः जिसमें पूर्व पद का अर्थ प्रधान रहता है जबकि दूसरा पद संज्ञा होता है। यही दोनों पद मिलकर अव्यय हो ताते हैं। जैसे–उपकष्णम्, यहाँ 'उप' अव्यय है तथा 'कृष्णम्' संज्ञा है लेकिन दोनों का मिला हुआ रूप उपकृष्णम् हुआ। अव्यय होने से किसी भी अव्ययीभाव शब्द के रूप नहीं चलते। समस्त पद सदैव नपुंसक लिंग में ही प्रयोग किया जाता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**	**अर्थ**
यथाशक्ति	शक्तिम्अनतिक्रम्य	शक्ति के अनुसार
प्रतिदिनम्	दिनं दिनं प्रति	प्रत्येक दिन
उपगंगम्	गंगायाः समीपे	गंगा के पास
यथोचित्तम्	उचितम् अनतिक्रम्न	अचेत के अनुसार
अधिहरि	हरौ इति	हरि के अधीन
निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम् अभावः	मक्खियों का अभाव

अव्ययीभाव समास के नियम–सूत्र–अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धिव्द्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति प्रादुर्भाव प्श्चात् यथाऽनुपूर्व्ययोग पद्य सादृश्य सम्प्रतिसाकल्याऽन्तवचनेषु।

इस सूत्र में अव्ययीभाव समास होता है–स्पष्टीकरण उदाहरण देकर–चार्ट द्वारा

समस्त पद	**विग्रह**	**अर्थ**	**सूत्र के आधार पर अर्थ**
अधिहरि	हरौइति	हरि के अधीन	अव्ययं विभक्ति सूत्र से विभक्ति अर्थ में
उपकृष्णम्	कृष्णस्यसमीपम्	कृष्ण के समीप	समीप अर्थ में
सुभद्रम्	भद्राणां समृद्धिः	भद्रों की समृद्धि	समृद्धि अर्थ में
दुर्राक्षसम्	राक्षसाणां व्यृद्धिः	राक्षसों की अवनति	यृद्धि अर्थ में
निर्दोषः	दोषाणाम् अभावः	दोषों का अभाव	अभाव अर्थ में
अतिहिमम्	हिमस्य अत्यम	हिम का नाश हो जाने पर	अव्यय (नाश) अर्थ में
अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा के अनुचित समय में	अनुचित अर्थ में
इतिहरि	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि शब्द का अर्थ में उच्चारण	प्रकाश अर्थ में
अनुकृष्णम्	कृष्णस्य पश्चात्	कृष्ण के पीछे	अश्चात् अर्थ में
अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम	एक रूप के योग्य	अथार्थ योग्यता अर्थ में
प्रत्येक	एकम् एकं प्रति	प्रति एक	यथार्थ वीप्सा अर्थ में
यथाशक्ति	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति के अनुसार	अनतिक्रम्य अर्थ में
सतृणम्	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तिनके को भी न छोड़कर	साकल्य अर्थ में
अनुविष्णु	विष्णोः पश्चात्	विष्णु के पीछे	पश्चात् अर्थ में

सूत्र–अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः–शरद् आदि शब्दों से अव्ययीभाव समास में समासान्त रच् प्रत्यय होता है। टच् प्रत्यय में ट् और च् का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष रहता है। जैसे–

उपशरदम् शरदःसमीपम् शरद् के समीप

3–अनश्च सूत्र

Downloaded From www.dietmathura.org

जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में अन् होता है वह अनन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त टच् प्रत्यय होता है। जैसे–

उपराजम्   राजः समीपम्   राजा के समीप

– शिक्षक बच्चों को पहले अव्यय का अर्थ समझाये। (अव्यय का अर्थ होात है जो कभी न व्यय हो) फिर इसके सूत्र को स्वयं उच्चारण कर अलग–अगल सन्धि विच्छेद करते हुए बच्चों से भी बुलवाये और सूत्र का अर्थ सरल शब्दों में समझाये और उससे मिलते जुलते शब्द बच्चों से बोलने को कहे। अव्यय में पहला पद उपसर्ग होता है। यह पहचान होते ही अव्ययीभाव समास का ज्ञान हो जायेगा और साथ में यह भी बताये कि संक्षिप्त होकर कैसे अर्थ में परिवर्तन नहीं हुआ।

गतिविधि–01 शिक्षक बच्चों के पाँच समूह बनवाये। पहला समूह विभक्ति अर्थ में कोई शब्द बोले। दूसरा समूह समीप अर्थ में तीसरा समूह समृद्धि अर्थ में चौथा समूह वृद्धि अर्थ में और पाँचवा समूह अभाव अर्थ में बोले। इस प्रकार इन शब्दों से सभी अर्थों में शिक्षक विस्तार से बताते हुए, उनकी बीच–बीच में सहायता करते हुए उनको ज्यादा से ज्यादा बोलने का अवसर देते हुए उसको स्पष्ट करे, इस प्रकार समूह बदलकर नीचे के उदाहरणों को स्पष्ट करे।

गतिविधि–02 शिक्षक कुछ सामासिक पदों को बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करे और बीच–बीच से बच्चों को खड़ा कर उसका विग्रह कराये और यह पूछे कि यह किस सूत्र से बना है और इसमें क्या संक्षिप्त हुआ है। जैसे–निर्दोषः–दोषाणाम् अभावः दोषों का अभाव–अभाव अर्थ में

यथाशक्ति	– शक्तिम् अतिक्रम्य	शक्ति के अनुसार	अतिक्रम्य अर्थ में
डपराजम्	– राजः समीपम्	राजा के समीप	समीप अर्थ में

गतिविधि–03 शिक्षक प्रशिक्षकों के समक्ष कुछ उदाहरण दे और पूछे कि इसके उदाहरण में क्या लोप हुआ है। जैसे–उपनगरम्   – नगर के पास (नगरस्य समीपम्)

अनुरूपम   – एक रूप के योग्य (रूपस्य योग्यम्)

इसमें के का लोप हुआ है। उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाय कि दो पदो के मिने पर एक पद बना और वह संक्षिप्त होकर उसके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

मूल्यांकन–

1. समास किसे कहते हैं और यह किस उपसर्ग और प्रत्यय से मिलकर बना है ?
2. अव्ययीभाव समास का सूत्रील्लेख करते हुए स्पष्ट करे कि अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं।
3. अव्ययीभाव शरत्प्रभृतिभ्यः सूत्र स्पष्ट करते हुए उसके उदाहरण दीजिए।
4. किन्हीं दो समस्त पद का विग्रह करते हुए उसके अर्थ को लिखिए।

2–तत्पुरुष समास–'प्रायेणोत्तर पदार्थ प्रधानस्तत्पुरुषः'

थ्जसमें उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है, तत्पुरुष समास कहलाता है। उदाहरणतया–'गंगा जलम् आनय'। यहाँ आनय इस क्रियापद के साथ जल का ही साक्षात् सम्बन्ध होता है, अतः यहाँ 'जल' इस उत्तर पद का अर्थ ही प्रधान है। अतः यहाँ तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास के मुख्य रूप से दो भेद किए गए हैं–

1. व्यधिकरण तत्पुरुष
2. स्मानाधिकरण तत्पुरुष

1–व्यधिकरण तत्पुरुष समास–जिस तत्पुरुष समास में प्रथम पद या पूर्व पद तथा द्वितीय पद या उत्तर पद दोनों भिन्न–भिन्न विभक्तियों में हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है।

Downloaded From   www.dietmathura.org

उदाहरण–गोसुखम् में गोभ्यः चतुर्थी विभक्ति में है तथा सुखम् प्रथमा विभक्ति में है। इस प्रकार दोनों पृथक–पृथक विभक्तियों के होने से यह व्यधिकरण तत्पुरुष समास है।

व्यधिकरण तत्पुरुष के छः भेद किये गये हैं–

1. कर्मकारक द्वितीया तत्पुरुष
2. करण तृतीया तत्पुरुष
3. सम्प्रदान चतुर्थी तत्पुरुष
4. अपादान पंचमी तत्पुरुष
5. सम्बंध षष्ठी तत्पुरुष
6. अधिकरण सप्तमी तत्पुरुष

अर्थात् प्रथम पद जिस विभक्ति का है वह उसी विभक्ति से सम्बंधित तत्पुरुष कहा जाएगा। जैसे–

क–कर्मकारक द्वितीया तत्पुरुष–इस विभक्ति का चिह्न को है जो छिपा हुआ है।

सामासिक पद	**विग्रह**	**अर्थ**
गजारूढ़ः	गजम् आरूढ़ः	हाथी पर आरूढ़
सुखप्राप्तः	सुख प्राप्तः	सुख को प्राप्त हुआ
स्वर्गगतः	स्वर्गगतः	स्वर्ग को गया हुआ
रामाश्रितः	रामम् आश्रितः	राम के आश्रित

ख–करण कारक तृतीया तत्पुरुष–इस विभक्ति का चिह्न से, के द्वारा है।

हरित्रातः	हरिणा त्रातः	विष्णु से रक्षा किया गया
नखभिन्नः	नखैः भिन्न	नखों से काटा हुआ
विद्याहीनः	विद्ययाहीनः	विद्या से हीन
मातासदृशः	मात्रा सदृशः	माता के समान
नेत्रहीनः	नेत्राभ्यांहीनः	नेत्रों से रहित

ग–सम्प्रदान कारक चतुर्थी विभक्ति–चिह्न के लिए है।

गोहितम्	गोभ्यः हितम्	गायों के लिए हित
यूपदारूः	यूपाय दारूः	यूप के लिए दारू
सुखार्थम्	सुखाय इदम्	सुख के लिए
भक्तप्रियः	भक्तेभ्यः प्रियः	भक्तों के लिए प्रिय
गुरुदक्षिणा	गुरवे दक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा

घ–अपादान कारक पंचमी विभक्ति–चिह्न 'से' है।

चौरभयम्	चौरात् भयम्	चोर से भय
बन्धनमुक्तः	बन्धनात् मुक्तः	बन्धन से मुक्त
वृक्षपतितः	वृक्षात् पतितः	वृक्ष से गिरा हुआ
दूरादागतः	दूरात् आगतः	दूर से आया हुआ
मार्गभ्रष्टः	मार्गात् भ्रष्टः	मार्ग से भ्रष्ट हुआ

च–सम्बन्ध कारक षष्ठी विभक्ति–का, की, के, रा, री, रे

सीतापतिः	सीतायाः पतिः	सीता का पति

Downloaded From www.dietmathura.org

राजपुरुषः	राजः पुरुषः	राजा का पुरुष
नन्दनन्दनः	नन्दस्य नन्दनः	नन्द का नन्दन
रामानुजः	रामस्य अनुजः	राम का अनुज
गोसेवा	गोः सेवा	गाय की सेवा

छ–अधिकरण कारक सप्तमी विभक्ति–चिह्न में मैं पद है।

नरोत्तम	नरेषु उत्तम	नरों में उत्तम
गुरुभक्तिः	गुरौ भक्ति	गुरु में भक्ति
कलानिपुणः	कलासु निपुणः	कलाओं में निपुण
पुरुषोत्तमः	पुरुषेषु उत्तमः	पुरुषों में श्रेष्ठ
कार्यकुशलः	कार्ये कुशलः	कार्य में कुशल
मुनिश्रेष्ठः	मुनिषु श्रेष्ठः	मुनियों में श्रेष्ठ

2–समानाधिकरण तत्पुरुष समास–जिसमें दोनों पदों की विभक्ति समान हो उसे समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। इसे ही कर्मधारय समास भी कहा जाता है। उदाहरण 'कृष्णः सर्पः उपसर्पति' इस वाक्य में सर्प की गमन क्रिया के साथ–साथ उसकी विशेषता भी बताई है। प्रथम पद कृष्णः तथा द्वितीय पद सर्पः एक ही प्रथमा विभक्ति के रूप हैं। अतः यहाँ समानाधिकरण तत्पुरुष समास है।

गतिविधि–01 तत्पुरुष समास को पहचानने के लिए शिक्षक बच्चों के सामने कुछ तत्पुरुष समास के उदाहरण प्रस्तुत करे फिर उनसे पूछे कि इसमें किस विभक्ति का तत्पुरुष समास है। उदाहरणार्थ–

सामासिक पद	**विग्रह**	**अर्थ**
शरणागतः	शरणम् आगतः	शरण में आया हुआ
स्वर्गगतः	स्वर्ग गतः	स्वर्ग में गया हुआ
नखभिन्नः	नखैःभिन्न	नखों से काटा हुआ
विद्याहीनः	विद्याहीनः	विद्या से हीन
वृक्षपतितः	वृक्षात् पतितः	वृक्ष से गिरा हुआ

इस गतिविधि में शिक्षक प्रशिक्षुओं से बाते करे और बताये कि कैसे इसमें विभक्ति लगी है इसके लिए शिक्षक बच्चों को रूप का भी ज्ञान कराये क्योंकि बिना रूप ज्ञान के बच्चे इसको पहचानने में असमर्थ होंगे।

गतिविधि–02 शिक्षक कुछ कार्ड जिस पर कुछ उदाहरण पद विग्रह व अर्थ सहित लिखे हो। बच्चों के छह समूह बनाकर शिक्षक कार्ड को मिलाकर पहले समूह को द्वितीया तत्पुरुष बताने को कहे दूसरा समूह तृतीया तत्पुरुष, तीसरा समूह चतुर्थी तत्पुरुष और चौथा समूह पंचमी तत्पुरुष, पाँचवा समूह षष्ठी तत्पुरुष और सप्तम समूह सप्तम तत्पुरुष को बताये और स्पष्ट करें कि यह कैसा हुआ।

मूल्यांकन–

1. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ?
2. निम्नलिखित पदों में पद–विग्रह कीजिए।

शरणागतः

विद्याहीनः

यूपदारुः

अश्वपतितः

Downloaded From www.dietmathura.org

राजपुत्रः

3–कर्मधारय समास (शिक्षक / बच्चे द्वारा)–सूत्र–'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'

इसमें पहला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा या सर्वनाम में से वह विशेष्य होता है। कर्मधारय समास चार रूपों में विभक्त हैः

अ–विशेषण पूर्व पद कर्मधारय–यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। उदाहरण–

मधुरफलम्	मधुरं च तत्फलम्	मधुर जो फल
नीलोत्पलम्	नीलं च तत् अपलम्	नीला कमल
नीलाकाशः	नीलः आकाशः	नीला आकाश
महाराजः	महान् चासौ राजा	महान् राजा
महादेवः	महान् चासौ देवः	महादेव

ब–उपमान पूर्वपद कर्मधारय–जब उपमानवाचक शब्द के साथ साधारण धर्मवाचक शब्दों का समास होता है वह उपमान पूर्वपद कर्मधारय होता है। उदाहरण–

1. घनश्यामः घन इव श्यामः में घन उपमान तथा श्यामवर्ण (बादल के समान काला) साधारण धर्म है।
2. नरसिंहः नरः इव सिंहः मनुष्य सिंह के समान
3. क्मलकोमलम् कमलम् इव कोमलम् कमल के समान कोमल

3–रूपक कर्मधारय–उपमान और उपमेय के अभिन्न रूप से कल्पित होने से उपमान उपमेय पद के समान को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। उदाहरण–

ज्ञानाग्नि	ज्ञानम् एव अग्नि	ज्ञान रूपी अग्नि
मुखकमलम्	मुखमेव कमलम्	मुख रूपी मलम
परीक्षापयोधिः	परीक्षा एव पयोधि	परीक्षा रूपी सागर
विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	विद्या रूपी धन

4–उभयपद विशेषण कर्मधारय–इस समास में विशेषण का विशेष्य के साथ समास होता है। उदाहरण–

श्वेतकृष्णः	श्वेत चासौ कृष्णः	श्वेत और काला
चराचरम्	चरं च अचरम् च	चराचर
सुप्तोत्थितः	पूर्वम् सुप्तः पश्चात् उत्थितः	पहले सोया फिर उठा

गतिविधि 01–शिक्षक पहले विस्तारपूर्वक कक्षा को चार समूहों में बाँटकर चर्चा करें। पहले समूह को कहा जाय कि वह विशेषण पूर्वपद कर्मधारय समास का कोई उदाहरण दे दूसरा समूह उसका विग्रह करे और तीसरा समूह उसका हिन्दी में अर्थ बताये और चौथा समूह उसकी परिभाषा के अनुसार व्याख्या करे। इस प्रकार क्रम बदलकर बारी–बारी से सभी बच्चों से पूछा जाय फिर बाद में शिक्षक उसको समझाते हुए स्पष्ट करे कि कैसे यह नियम के अनुसार समास हुआ।

गतिविधि 02–शिक्षक कुछ उदाहरण स्वयं दे और उसका विग्रह कुछ छात्रों से करायें तथा कुछ छात्रों से उसका हिन्दी अर्थ बताने को कहें।

जैसे–महापुरूषः	––	––
नरसिंहः	––	––
मुखकमलम्	––	––

Downloaded From **www.dietmathura.org**

श्वेत कृष्णः —— ——

गतिविधि 03–कार्ड विधि से अलग–अलग (शब्द विग्रह और समस्त पद) बनाकर हर समास की समझ विकसित की जा सकती है।

मूल्यांकन–

1. कर्मधारय समास किसे कहते हैं ?
2. कर्मधारय समास के भेदों को लिखिए।
3. निम्नलिखित समास का विग्रह कीजिए।

- कृष्णसर्पः
- महापुरुषः
- नरसिंहः
- मुखकमलम्
- चराचरम्

4. विषेषण पूर्वपद कर्मधारय समास किसे कहते हैं।
5. रूपक कर्मधारय अथवा उभयपद विषेषण कर्मधारय समास की परिभाषा दीजिए।

4–दिगु समास–'संख्यापूर्वो दिगु'

जिसमें पूर्वपद संख्यावाची होता है वह दिगु समास कहलाता है। यह समास सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में होता है।

समस्तपद	**विग्रह**	**अर्थ**
पंचगवम्	पंचानाम् गवाम् समाहारः	पाँच गायों का समूह
त्रिभुवनम्	त्रयाणम् भुवनानाम् समाहारः	तीन भुवनों का समूह
नवरात्रम्	नवानां रात्रीणां समाहारः	नौ रात्रियों का समूह
पंचरात्रम्	नवानां रात्रीणां समाहारः	पाँच पात्रों का समूह
चतुर्युगम्	चतुर्णां युगानाम् समाहारः	चार युगों का समूह

इसमें शिक्षक बच्चों से विस्तृत चर्चा कर बताये कि सभी उदाहरणों में पहला पद संख्यावाची है और यह नपुंसकलिंग में है और सभी समूहों को इंगित कर रहा है जिससे बच्चों को आसानी से इसकी पहचान हो सकेगी।

गतिविधि 01–निम्नलिखित चार्ट को दिखाकर इसे समझाया जा सकता है।

समस्त पद	**विग्रह**	**अर्थ**
त्रिभुवनम्	त्रायाणाम् भुवनाम् समाहारः	पाँच अमृतों का समूह
पंचामृतम्	पंचानाम् अमृतानाम् समाहारः	पाँच अमृतों का समूह
त्रिलोकः	त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः	तीनों लोकों का समूह
पंचवरी	पंचानाम् वटाना समाहारः	पाँच वटवृक्षों का समूह
पंचगवम्	पंचानाम् गवाम् समाहारः	पाँच गायों का समूह

प्रशिक्षकों का ध्यान पद के प्रथम संख्यावाचक शब्द पर आकृष्ट करें। स्पष्ट करें कि इस समास में प्रथम पद संख्यावाची है।

Downloaded From **www.dietmathura.org**

गतिविधि 02—कुछ उदाहरण देकर उसका विग्रह कराये अथवा बच्चों से स्वयं कोई उदाहरण देने को कहें इससे विषय और गहराई से समझ में आने लगेगी।

मूल्यांकन—

1. निम्नलिखित पदों में विग्रह कीजिए।
   त्रिलोकः, पंचपात्रम्, नवरात्रम्
2. सुमेलित कीजिए—

त्रिलोकः	पंचानाम् गवाम् समाहारः
त्रिभुवनम्	त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः
पंचगवम्	त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः

3. दिगु समास किसे कहते हैं।

5—बहुब्रीहि समास—(शिक्षक / बच्चों द्वारा) सूत्र 'अनेकमन्य पदार्थे'

जिस समास में दोनों पद अप्रधान हो तथा अन्य पद प्रधान होता है अर्थात् दोनों पद अपने साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ को प्रक्ट करे, वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

जैसे—

लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः (गणेशः) लम्बा है उदर जिसका
पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः (श्रीकृष्णः) पीले वस्त्र वाला
नीलकण्ठः	नीलं कण्ठं यस्य सः (शिवः) नीला है कण्ठ जिसका
यशोधनः	यशः एव धनं यस्य सः (राजा) यश ही है धन जिसका
गजाननः	गज एव काननं यस्य सः (गणेशः) हाथी के समान मुख जिसका
चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः (शिव) चन्द्र है शिखर पर जिसके

गतिविधि—उपर्युक्त उदाहरणों में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि यह किसी अन्य विशेषण की बात कर रहे हैं। यहाँ न तो किसी का लम्बा उदर है— यहाँ तो गणेशजी की बात की जा रही है। चर्चा के पश्चात् इस बात पर विशेष बल दें कि यहाँ दोनों पद अप्रधान हैं और यह किसी अन्य पद (प्रधान) की प्रधानता बतायी जा रही है इसलिए यहाँ सभी उदाहरणों में बहुब्रीहि समास है।

मूल्यांकन—निम्नलिखित का विग्रह कीजिए—

पीताम्बरः नीलकण्ठः चन्द्रशेखरः लम्बोदरः

6—द्वन्द्व समास—'चार्थे द्वन्द्वः अर्थात्— जिसमें प्रायः पूर्वपद तथा उत्तर पद प्रधान होते हैं, द्वन्द्व समास कहलाता है। यह समस्त पद प्रधान समास हैं। इसमें 'च' से दो या दो से अधिक संज्ञाओं को जोड़ा जाता है। द्वन्द्व का अर्थ ही होता है दो। द्वन्द्व समास के मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन भेद किये गये हैं।

1—इतरेतर द्वन्द्व—इसमे दोनों पदों का अपना अलग—अलग अस्तित्व होता है, वहाँ इतरेतर द्वन्द्व होता है। जैसे—'रामलम्मणौ' में राम तथा लक्ष्मण का अलग—अलग अस्तित्व है।

सीतारामौ	सीता च रामश्च	सीता और राम
मातापितरौ	माता च पिता च	माता और पिता
पार्वतीपरमेश्वरौ	पार्वती च परमेश्वरश्च	पार्वती और परमेश्वर

इन सभी उदाहरणों में दोनों का अलग—अलग अस्तित्व है।

2—समाहार द्वन्द्व—इसमें पद अपना अर्थ बतलाने के साथ—साथ समूह या समाहार का बोध कराते हैं उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। जैसे—

Downloaded From www.dietmathura.org

पाणिपादम्	पाणी च पादौ च/तेषां समाहारः	हाथ और पैर
अहोरात्रम्	अहः च रात्रि च	रात और दिन
गद्यकाव्यम्	गद्यं च काव्यम् च	गद्य और काव्य

3–एकशेष द्वन्द्व–जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है उसे 'एकशेष द्वन्द्व' समास कहते हैं। जैसे–

पितरौ	माता च पिता च	माता और पिता
ब्राह्मणौ	ब्राह्मणी च ब्राह्मणश्च	ब्राह्मणी और ब्राह्मण
मयूरौ	मयूरी च मयूरः च	मयूरी और मयूर
दुहितरौ	दुहिता च दुहिता च	दो पुत्रियाँ

प्राक्षिुओं/विद्यार्थियों के समक्ष उपर्युक्त उदाहरण देकर यह स्पष्ट करना आवयक है कि दोनों पद कैसे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

गतिविधि–कक्षा में बच्चों के दो समूह बनाकर कहें कि द्वन्द्व समास के उदाहरण दीजिए जो सबसे ज्यादा उदाहरण प्रस्तुत करेगा उसके लिए विशेष तालिया बजवायें और कम बताने वाले समूह को भी प्रोत्साहित करें। इस तरह प्रशिक्षक बच्चों को समास का ज्ञान स्पष्ट रूप से करा सकता है।

मूल्यांकन–

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
   - समास किसे कहते हैं।
   - समास के भेदों के नाम लिखिए।
2. अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं कोई दो उदाहरण देकर स्पष्ट करें।
3. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह सहित अर्थ बताइए।

अतुरूपम्	पंचगवनम्
श्वेत कृष्णः	शरणागतः
मुखकमलम्	महापुरुषः

4. निम्नलिखित पदों में प्रयुक्त समासों का मिलान कीजिए।

विद्याधनम्	दिगु समास
पंचपात्रम्	बहुब्रीहि समास
लम्बोदरः	कर्मधारय
मातापितरौ	अव्ययीभाव समास
अनुरूपम्	द्वन्द्व समास

5. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का नाम बताइए।

सामासिक पद	विग्रह	समास का नाम
प्रतिदिनम्	————	————————
उपनगरम्	————	————————
नरसिंहः	————	————————
चन्द्रशेखरः	————	————————

Downloaded From **www.dietmathura.org**

पाठ–4

शब्द रूप–शब्द प्रकार, वचन व विभक्तियों का ज्ञान

शब्द–(शिक्षक द्वारा) शब्दों की रचना अक्षरों (वर्णों) से होती है। अक्षर (वर्ण) एक या दो ध्वनियों के मेल से बनते हैं। अतः शब्द एक या अनेक अक्षरों के ऐसे समूह हैं जिनसे किसी अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। आरम्भ में छोटे बच्चे पानी के लिए 'मम' या 'प' और 'दूध' के लिए दुद कहते हैं किन्तु धीरे–धीरे वाणी में स्पष्टता होने पर वे अपनी बातें छोटे–छोटे शब्द के द्वारा कहने लगते हैं, किन्तु वाक्य का आधार शब्द है क्योंकि शब्द से ही अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। 'शब्द' ही वाक्य के प्राण स्वरूप हैं। अक्षरों का सार्थक समूह होने पर ही शब्द 'शब्द' कहा जा सकता है। वर्णों के संघात से संस्कृत में शब्द पर रचना होते हैं। शब्दों का गुम्फन ठीक होना चाहिए अगर यह नहीं है तो सही सम्प्रेषण नहीं होगा।

शिक्षण बिन्दु–

- संस्कृत के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
- परिवेशीय वस्तुओं का संस्कृत भाषण में बोध कराना।
- संस्कृत शब्दों को समझने की दक्षता का विकास करना।
- शुद्‌ध उच्चारण की क्षमता विकसित करना।
- वचन एवं विभक्तियों का ज्ञान कराना।

संस्कृत भाषा को सीखने के लिए वातावरण के साथ–साथ शिक्षक शब्दों का ज्ञान भी कराये। शब्दों का ज्ञान बच्चों से आकर्षक एवं रोचक ढंग से कराना चाहिए। शब्द के वर्णों को स्पष्ट करते हुए (बालक=ब्+आ+ल्+अ+क्+अ) बताएं कि बालक शब्द के अन्त में अ वर्ण होने के कारण इसे अकारान्त कहते हैं, इसके आगे (:) विसर्ग लगाने पर अकारान्त पुल्लिड्‌ग बन जाता है। जैसे–रामः, शिक्षकः आदि।

शब्द के प्रकार–1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. अव्यय 5. क्रिया (कारक)। संज्ञाएं छह प्रकार की होती हैं–1. पुल्लिंग स्वराज (अजन्त) 2. स्त्रीलिंग स्वराज (मिजन्त) 3. नपुंसकलिंग रचरान्त (अजन्त) 4. हलन्त (व्यंजनान्त पुल्लिंग 5. व्यजनान्त स्त्रीलिंग 6. हलन्त (व्यजनान्त) नपुंसकलिंग 7. अन् व्यजनान्त पुल्लिंग (राजन्)

इसमें तीन लिंग होते हैं–इन सबके रूप तीनों वचनों और सातो विभक्तियों में चलते हैं। सम्बोधन प्रथमा से भिन्न नहीं है। रूप में अन्तर केवल एकवचन में होता है।

1–पुल्लिंग में–

1. अकारान्त पुल्लिंग
2. इकरान्त पुल्लिंग
3. उकारान्त पुल्लिंग
4. ऋकारान्त पुल्लिंग

(अ) अकारान्त पुल्लिंग, जैसे–राम

इसका (राम) शब्द रूप सभी विभक्तियों में प्रथमा से लेकर सम्बोधन तक तथा सभी वचनों में (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) कारक चिह्नों के अनुसार चलते हैं। जैसे–राम

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः

–0–

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org